8

प्राथमिक बाल शिक्षा के लक्ष्य तथा क्रियाकलाप

पद्मा यादव*

प्रारंभिक बाल शिक्षा आज के युग में सामान्य रूप से न केवल बच्चों के संपूर्ण विकास का अहम निवेश है, बल्कि प्रारंभिक शिक्षा को सार्वजनीकरण रूप में राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। प्रारंभिक बाल शिक्षा सुविधाओं में गुणात्मक विस्तार के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा समन्वित प्रयास किया जा रहे हैं, जिससे देश के करोड़ों बच्चों को इसका लाभ मिल सके। इस विस्तार के चलते काफ़ी संख्या में प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षकों को अल्पकालीन प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। ज़्यादातार लोगों को यह जानकारी नहीं होती कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर क्या कराया जाए या कैसी गतिविधियाँ या क्रियाएँ करायी जाएँ, जिससे बच्चों को आनंददायक वातावरण मिले। वे पूर्व-प्राथमिक स्तर को प्राथमिक स्तर का *डाउनवर्ड एक्सटैन्शन* मान कर बच्चों को पढ़ाते हैं और टीचर ट्रेनिंग भी देते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लेख में 3–4 एवं 4–5 साल के बच्चों के लिए आयोजित की जाने वाली क्रियाओं के उद्देश्य एवं क्रियाएँ साझा की गई हैं जो शिक्षक प्रशिक्षकों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकती हैं। ये क्रियाएँ एक लैबोरेटरी स्कूल में कार्य अनुभव और उपस्थित ग्रन्थों के आधार पर सुझाई गयी हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों का शारीरिक विकास होता है और बच्चों को पढ़ने-लिखने एवं गणित की तैयारी में मदद मिलती है। यह बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है इसके साथ ही बच्चों में कई अन्य सृजनात्मक क्षमताओं को भी विकसित करती है। तीन से छः वर्ष की आयु के बीच के बच्चे पूर्व प्राथमिक शालाओं में पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करते हैं। ये शालाएँ बच्चों को प्रेरणादायक खेल वातावरण प्रदान करने के साथ ही बच्चों का बौद्धिक, भाषागत, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक विकास करने में सहायक हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों का सर्वांगीण विकास करना। अतः बच्चों को अग्रलिखित

*प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110 016

संबंधों की उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए गतिविधियाँ कराई जानी चाहिए —

- सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास
- शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों का विकास
- भाषा विकास
- संज्ञानात्मक विकास
- सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध का विकास

3–4 आयु वर्ग और 4–5 आयु वर्ग के बच्चों के लिए सामान्यतः एक जैसी गतिविधियाँ होती हैं। बस 4–5 आयु वर्ग की गतिविधियों का स्तर 3–4 आयु वर्ग की गतिविधियों की अपेक्षा थोड़ा अधिक होता है। लेख में इन्हीं दोनों आयु वर्ग के लिए गतिविधियाँ सुझाई गयी हैं।

3–4 आयु वर्ग के लिए गतिविधि लक्ष्य

सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास

बच्चों के सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के अंतर्गत अनेक बातें शमिल हैं, जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, सुरक्षा एवं भरोसे की भावना का विकास करना, प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र के वातावरण तथा दिनचर्या से परिचय कराना, अच्छी आदतों का निर्माण करना, जैसे—शौचालय का उचित प्रयोग, हाथ धोना, व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन की उचित आदतें, शिक्षिका/कार्यकर्ता का अभिवादन करना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दूसरे बच्चों के साथ खेलना सीखना इत्यादि, अपने व्यवहार को नियंत्रित करने की योग्यता का विकास करना, अपने बारे में अच्छी भावना विकसित करना, सामूहिक क्रियाओं के प्रति रुचि का विकास करना, सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीकों के अनुसार अपने व्यवहारों तथा संवेगों को नियंत्रित करने की योग्यता का विकास करना आदि।

शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों का विकास

बच्चों के शारीरिक एवं माँसपेशियों के विकास के लिए यह ज़रूरी है कि हम बच्चों को साथ में काम करने के अनेक अवसर उपलब्ध कराएँ। साथ ही शिक्षक को कुछ और बातों का ध्यान रखना होगा उदाहरण के लिए, उचित वृद्धि और विकास पर नज़र बनाये रखना, स्थूल माँसपेशियों और सूक्ष्म माँसपेशियों में संतुलन बनाने में मदद करना, छोटी माँसपेशियों को विकसित करने के अवसर प्रदान करना, आँख-हाथ में तालमेल, हाथ-मुँह में तालमेल इत्यादि।

भाषा विकास

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है। भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम होता है— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। बच्चे में भाषा सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। भाषा का विकास मूलत: जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही आरंभ हो जाता है जो मूलत: अनुकरण एवं अभ्यास द्वारा अर्जित की जाती है। भाषा विकास के लक्ष्य हैं— सुनने के कौशल का विकास करना, जिसमें शामिल है ध्वनि विभेदीकरण, सुनने का विस्तार, सुनकर समझना; मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना, शब्द भंडार का विकास, अभिव्यक्ति में स्पष्टता एवं प्रवाह, पूर्ण वाक्यों का प्रयोग, आवश्यकताओं एवं विचारों का संप्रेषण इत्यादि।

संज्ञानात्मक विकास

वस्तुओं का मिलान करके तथा पहचान करके उनके अंतर को पहचानने की क्षमता का विकास करना

जैसे — एक समय में दिखायी गयी 3 – 4 वस्तुओं का निरीक्षण करके तुरंत पुन: स्मरण करने की क्षमता का विकास, किसी परिचित वस्तु का चित्र देखकर उसके गायब भाग की पहचान करने की क्षमता का विकास करना, किसी एक आयाम या सम्बोध के आधार पर जैसे आकार या रंग वर्गीकरण करने की क्षमता का विकास करना, तीन-चार वस्तुओं से बने नमूने को फिर से बनाने की क्षमता का विकास करना, सरल स्तर पर संपूर्ण तथा उसके भागों के सहसंबंध को समझने की क्षमता का विकास करना, सरल समस्याओं को सुलझाने के लिए सही ढंग से सोचने की क्षमता का विकास करना, लाल, नीला, पीला, हरा, सफ़ेद और काला रंग पहचानने, नाम बताने तथा मिलान करने की क्षमता का विकास, निम्नलिखित को पहचानने तथा मिलान करने की क्षमता पर विकास — गोल, चौकोर, तिकोन, गोला बनाने की क्षमता का विकास, छोड़ा-बड़ा, लंबा-छोटा, भारी हल्का, लंबा-नाटा, मोटा/ घना/ पतला, चौड़ा-संकरा, दूर-नजदीक को पहचानने, नाम बताने तथा मिलान करने की क्षमता का विकास करना, स्थितियों को पहचानने की क्षमता का विकास करना, जैसे — अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे; दैनिक क्रियाओं के संदर्भ में निम्नलिखित सम्बोधों की चेतना का विकास करना, जैसे — दिन-रात, दोपहर-संध्या, घंटों का ज्ञान, ठंडा और गरम में भेद करने पहचानने और जानने की क्षमता का विकास इत्यादि। कुछ प्रस्तावित/ सम्बोध/ प्रोजेक्ट, जैसे— स्वयं, परिवार, पालतू तथा जंगली जानवर, घर, मौसमी सब्ज़ियाँ तथा फल, पौधे, सुरक्षा संबंधी आदतें, पर्व त्यौहार, हवा, पानी इत्यादि।

सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध का विकास

बच्चों में सृजनात्मकता एवं सौंदर्यबोध का विकास करने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है, जैसे — कला के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना, शारीरिक अंगों का कलात्मक ढंग से संचालन करना, पर्यावरण में उपलब्ध रंगों तथा सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना इत्यादि।

4–5 आयु वर्ग हेतु गतिविधि लक्ष्य

सामाजिक – संवेगात्मक विकास

सामाजिक-संवेगात्मक विकास बच्चों के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण आयाम है। इसमें अनेक बातें शमिल हैं, जैसे — प्रारंभिक बाल कार्यकर्ता/ शिक्षिका (यदि नई हों) तथा कक्षा के अन्य बच्चों से परिचय होना, अच्छी आदतों का निर्माण करना, जैसे— व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय स्वच्छता, प्रारंभिक बाल शिक्षिका/कार्यकर्ता का अभिवादन, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, किसी वस्तु को मिल बाँटकर उपयोग एवं सहयोग करना, नियमित उपस्थिति, अपने बारे में अच्छी भावना का विकास करना, सामूहिक क्रियाओं के प्रति रुचि का विकास करना, सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीकों को अपने व्यवहारों तथा संवेगों को नियंत्रित करने की योग्यता का विकास करना, निर्णय लेने की योग्यता का विकास करना इत्यादि।

शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों का विकास

बच्चों में उचित वृद्धि बनाये रखने के लिए नियमित जाँच, स्थूल माँसपेशियों में संतुलन, सूक्ष्म माँसपेशियों में संतुलन, बच्चों की छोटी माँसपेशियों का विकास, आँख-हाथ में तालमेल, हाथ-मुँह में तालमेल इत्यादि पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

भाषा विकास

भाषा विकास में शमिल है—सुनने के कौशल का विकास करना—ध्वनि विभेदीकरण, सुनने का विस्तार, सुनकर समझना, आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ सुनना; मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना—शब्द भंडार का विकास, अभिव्यक्ति में स्पष्टता और प्रवाह, क्रमबद्ध ढंग से बात करना; सृजनात्मक अभिव्यक्ति; पढ़ने की तैयारी करवाना, देखी गयी वस्तुओं का विभेदीकरण, सुनी गयी ध्वनियों का विभेदीकरण (शब्दों की प्रथम एवं अंतिम ध्वनि), दृश्य ध्वनि सह संबंध, बाएँ से दाएँ का दिशाबोध; लिखने की तैयारी करना इत्यादि।

संज्ञानात्मक विकास

पाँचों इन्द्रियों का प्रयोग करके वस्तुओं का नाम बताना तथा 3 स्तरों पर क्रमीकरण करने की क्षमता का विकास करना, जैसे— मीठा, उससे मीठा, सबसे मीठा, बड़ा, उससे बड़ा, सबसे बड़ा आदि। एक समय में दिखायी गई 6–7 वस्तुओं का निरीक्षण करने तथा तुरंत पुन: स्मरण करने की क्षमता का विकास, किसी परिचित वस्तु के अधिक सूक्ष्म या गायब भाग की पहचान करने की क्षमता का विकास, दो सम्बोधों या आयामों के आधार पर जैसे रंग एवं आकार, वर्गीकरण करने की क्षमता का विकास, वस्तुओं, चित्रों, कहानियों तथा घटनाओं को पुन: प्रस्तुत करने तथा उसी तर्क से क्रम में बढ़ाने का विकास, संपूर्ण तथा भाग के सह संबंध को अपेक्षाकृत कुछ जटिल स्तर पर समझने की क्षमता का विकास, अपेक्षाकृत कुछ जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए सही ढंग से सोचने की क्षमता का विकास।

लाल, पीला, नीला, काला, सफ़ेद के साथ अन्य रंगों जैसे भूरा, नारंगी, बैंगनी की पहचान और नाम बताना, तीन स्तरों पर प्रमुख रंगों का क्रमीकरण करने की क्षमता का विकास (यह समझने की क्षमता कि रंगों को मिलाने से नये रंग तैयार हो जाते हैं।) निम्नलिखित आकारों के नाम बताने की क्षमता तथा पर्यावरण में उपलब्ध उन्हीं आकार की वस्तुओं से मिलान-मिलाना—गोल, चौकोर, तिकोन, अन्य आकारों, जैसे—तारा, छड़ी, आयत, मेहराब (आधा गोला) आदि को पहचानने की क्षमता विकसित करना।

अंक संबंधी सम्बोधों का तीन स्तरों तक क्रमीकरण करने की क्षमता का विकास करना। निम्नलिखित की क्षमता का विकास—एक से एक का संबंध, पाँच तक की संख्या का संबोध, पाँच तक के अंकों की पहचान, पाँच तक के अंकों को गिनना तथा उन्हें क्रम में रखना, निम्नलिखित स्थितियों की पहचान तथा उनके लिए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग, जैसे— सबसे ऊपर-सबसे नीचे, अंदर-बाहर, पहले-बाद में, ऊपर-नीचे, अगला-पिछला, यहाँ-वहाँ, किनारे-बीच में, बगल में-पीछे-सामने; निम्नलिखित सम्बोधों की चेतना का विकास—समय से, समय से पहले, देर से; दिनचर्या के संदर्भ में, पहले-बाद में, घड़ी से समय का मापन, सप्ताह के दिन; तापमान की तुलनात्मक स्थितियों जैसे गर्म, उससे गर्म, सबसे गर्म को पहचानने, विभेदीकरण करने तथा जानने की क्षमता का विकास। कुछ और सम्बोध/ प्रोजेक्ट, जैसे—बरसात, मौसम, कीड़े-मकोड़े, समाज के मददगार, संसार, यातायात इत्यादि।

सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध का विकास

कला के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना, शारीरिक अंगों का कलात्मक ढंग से संचालन, सृजनात्मक चिंतन का विकास करना, पर्यावरण में उपलब्ध सौंदर्य एवं रंगों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।

3–4 एवं 4–5 आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल क्रियाएँ

ऊपर दिये गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा निम्न क्रियाएँ/गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

सामाजिक – संवेगात्मक विकास

शिक्षक बच्चों को खेल के माध्यम से संवेगों पर नियंत्रण करना सिखा सकते हैं। सामाजिक–संवेगात्मक विकास में सहायक गतिविधियाँ हैं— अनौपचारिक वार्तालाप, गीत तथा कविताएँ, अभिनय करना, कठपुतली का खेल, स्वतंत्र एवं निर्देशित खेल, सामूहिक क्रियाएँ एवं खेल, भोजन/नाश्ते के समय की क्रियाएँ, त्योहार एवं जन्मदिन मनाना, आत्मनिर्भरता के भाव को जगाने वाली क्रियाएँ अर्थात् किसी क्रिया में नेतृत्व करना, बच्चों को दायित्व बाँटना आदि। वार्तालाप, विकलांग बच्चों का समूह में शामिल करना, प्रकृति में विचरण, बागवानी-पलतू जानवरों की देखभाल करना।

शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों का विकास

बच्चों में शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों के विकास के लिए सहायक गतिविधियाँ हैं—लंबाई और वजन की मासिक जाँच, पूरक पोषण देना, समय-समय पर होने वाली मासिक जाँच, बच्चों और समाज को स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी जानकारी देना, स्वतंत्र एवं निर्देशित खेल, दौड़ने, उछलने, कूदने, चढ़ने, फेंकने, संतुलन रखने, लुढ़कने आदि वाली क्रियाएँ, चित्रकला एवं रंजनकला, फाड़ना, काटना, चिपकाना, धागा डालना, सिलाई करना, बालू और पानी के खेल, मिट्टी का काम, जिन वस्तुओं को इच्छानुसार तोड़ा-मरोड़ा जा सके, उनके साथ मनचाहे ढंग से खेल, उँगलियों को नचाते हुए गीत गाना, हाथ और चम्मच से भोजन करना इत्यादि।

भाषा विकास

भाषा विकास के लिए बच्चों के साथ स्वतंत्र एवं निर्देशित वार्तालाप करें, सुनने एवं शब्दों के खेल खेलें जैसे—तुकान्त शब्दों के खेल, लययुक्त छंद और गीत, ध्वनियों की पहचान आदि। अन्य गतिविधियाँ जैसे—पहेलियाँ, अभिनय, कहानी सुनाना और बनाना, कठपुतली का खेल, दृश्य विभेदीकरण संबंधी खेल एवं क्रियाएँ, शब्दों की ध्वनियों का विभेदीकरण तथा शब्द-निर्माण के खेल, सचित्र पुस्तकों को सही ढंग से पकड़ना, चित्र एवं शब्द का मिलान, सूक्ष्म माँसपेशियों की समस्त क्रियाएँ, खींची गई आकृति में रंग भरना, बिंदुओं को जोड़ना, आकृतियों की बनावट की नकल करना (पेंसिल तथा केयॉन से) इत्यादि भाषा विकास में बहुत सहायक हैं।

संज्ञानात्मक विकास

मूल संज्ञानात्मक कौशलों और प्रक्रियाओं के विकास हेतु गतिविधियाँ करवाएँ, जैसे—इंद्रियों का विकास – देखने की इंद्रिय,सुनने की इंद्रिय,स्पर्श से अनुभव करने की इंद्रिय, सूँघने की इंद्रिय, स्वाद की इंद्रिय, स्मृति एवं निरीक्षण क्षमता का विकास,

वर्गीकरण करने की क्षमता का विकास, क्रमिक चिंतन का विकास, समस्या समाधान तथा विवेक का विकास।

प्रमुख संबोधों का विकास जैसे—रंग के संबोध का निर्माण, आकारों के संबोध का निर्माण, अंक पूर्व संबोध का निर्माण, अंक संबोधों का निर्माण, स्थान के संबोध का निर्माण, समय के संबोध का विकास, तापमान के संबोध का विकास, निम्नलिखित के संबंध में पर्यावरणीय तापमान के संबोध का विकास, प्राकृतिक पर्यावरण, भौतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण प्रोजेक्ट/ थीम के रूप में चर्चा की जा सकती है।

दृष्टि संबंधी तथा ध्वनि विभेदीकरण संबंधी खेल क्रियाएँ, पर्यावरण में उपलब्ध विभिन्न बनावट की वस्तुओं को छूकर तथा पहचानने वाले कार्डों के साथ क्रियाएँ, विभिन्न स्वाद वाली वस्तुओं के साथ क्रियाएँ, स्मृति खेल, 'क्या गायब है', निरीक्षण तथा निरीक्षित वस्तु के पुन: स्मरण पर आधारित क्रियाएँ, वस्तुओं, चित्र कार्डों का प्रयोग करके वर्गीकरण क्रियाएँ। वर्गीकरण के खेल, दिया गया नमूना फिर से बनाना, कहानियों और घटनाओं का सही क्रम में पुन: स्मरण, क्रमिक चिंतन पर आधारित खेल, पहेली एवं भूल भुलैया का हल निकालना, समस्याओं को सुलझाने से संबंधित क्रियाकलाप जैसे दो या उससे अधिक वस्तुओं के सहसंबंध पर आधारित कार्ड, सरल प्रश्नों के उत्तर देना, वार्तालाप, गीत और तुकबंदियाँ, अभिनय, वस्तुओं, कपड़ों, पर क्रियाकलाप, निर्देशित खेल, रचनात्मक क्रियाएँ, प्रकृति में भ्रमण, रंगों के संबंध के लिए वर्णित क्रियाएँ, वार्तालाप एवं कहानियाँ, पानी के खेल, बालू के खेल, क्रमीकरण कार्ड, गुटकों के खेल, निर्देशित खेल एवं क्रीड़ा, अभिनय, अभिनय पर आधारित खेल जैसे दुकान-दुकान, वस्तुओं के साथ और बाद में संख्या कार्ड्स के साथ निर्देशित खेल, अंकों के गीत, अंकों के खेल, अंकों की पहेली, समय संबोध के कार्ड्स, दफ़्ती आदि पर बनायी गयी घड़ियाँ, दैनिक क्रियाओं का क्रम से पुन:स्मरण करने संबंधित क्रियाएँ, सरल प्रयोग जैसे—बनाये गये थर्मामीटर, वार्तालाप, पहले वर्णित विभिन्न क्रियाओं का प्रोजेक्ट के विषयों से एकीकरण, कक्षा में प्रदर्शन, भ्रमण एवं प्रकृति दर्शन, त्योहारों को मनाना तथा उनसे संबंधित वस्तुएँ तैयार करना, हवा, पानी तथा पौधे, उगाने से संबंधित सरल प्रयोग, बालू तथा पानी के खेल इत्यादि।

सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध का विकास

कुछ क्रियाकलाप जैसे—सृजनात्मक चित्रकला, लयात्मक गतिशीलता तथा नाटक आदि जैसी क्रियाएँ—बहुउत्तरीय प्रश्न, 'आओ बनें' वाले खेल, गीत एवं कहानियाँ बनाना, प्रकृति के भ्रमण, कक्षा प्रदर्शन आदि।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी., 2000. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——— 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

कौल, विनीता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. पूर्व प्राथमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

गुप्त, मंजीत सेन. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था— देख-भाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड. दिल्ली.

भारत सरकार. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय. नयी दिल्ली.

———. 2011. *निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय. नयी दिल्ली.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) नीति 2013*, नयी दिल्ली.

मुरलीधरन, राजलक्ष्मी और शोबिता अस्थाना, 1991. *शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ*. विद्यालय पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विद्यालय. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

यादव, पद्मा. 2015. एग्ज़ेम्पलर *गाइडलाइंस फ़ॉर इंप्लिमेंटेशन ऑफ़ अर्ली* चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन *(ई.सी.सी.ई.) करीकुलम*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.